भारत की आयातित खाद्य मुद्रास्फीति

लेखक- नुशैबा इकबाल एवं हरीश दामोदरन (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-III (भारतीय अर्थव्यवस्था) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

19 फरवरी, 2020

"विचलन की अवधि के बाद घरेलू और वैश्विक खाद्य कीमतों में वृद्धि हो रही है। कोरोनावायरस, वैश्विक क्रूड की कीमतें और एक बेहतर रबी फसल आने वाले महीनों में कीमतों का निर्धारण कर सकती है।"

क्या भारत में खाद्य मुद्रास्फीति वैश्विक मूल्य उठा-पटक से प्रभावित है? प्रत्यक्ष रूप से, यह मामला एक बहस का मुद्दा प्रतीत होता है।

खाद्य मुद्रास्फीति की वापसी

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के खाद्य मूल्य सूचकांक - जो कि एक आधार अवधि (2002-04=100) के संदर्भ में प्रमुख खाद्य वस्तुओं की एक बास्केट की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में बदलाव का एक उपाय है - जनवरी 2020 में 182.5 अंक पहुँच गया, जो दिसंबर 2014 के 185.8 के स्तर के बाद से उच्चतम है।

इसके अलावा, इस सूचकांक पर आधारित वर्ष-दर-वर्ष मुद्रास्फीति दर अगस्त 2019 में 1.13% से बढ़कर सितंबर में 2.86%, अक्टूबर में 5.58%, नवंबर में 9.33%, दिसंबर में 12.22% और जनवरी 2020 के लिए अब 11.3% हो गई है।

वैश्विक खाद्य कीमतों में यह तेज उछाल भारत के रुझानों में भी परिलक्षित होता है। वार्षिक उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (सीएफपीआई) मुद्रास्फीति अगस्त 2019 में महज 2.99% थी, जो सफल पाँच महीनों में 5.11%, 7.89%, 10.01%, 14.19% और 13.63% थी।

"खाद्य सामग्री" के लिए थोक मूल्य सूचकांक में साल-दर-साल मुद्रास्फीति कुछ हद तक बढ़ने लगी, जो अगस्त 2019 में प्रत्येक% 7.8% पिछले वर्ष जनवरी में 2.41% थी। इसके बाद अक्टूबर में यह बढ़कर 9.8%, नवंबर में 11.08%, दिसंबर में 13.24% और जनवरी 2020 में 11.51% हो गया।

दिसंबर 2019 के लिए खुदरा और थोक खाद्य मुद्रास्फीति की दर क्रमशः नवंबर 2013 और दिसंबर 2013 के बाद से सबसे अधिक थी। सीधे शब्दों में कहें तो अक्टूबर या उसके बाद से खाद्य मुद्रास्फीति ने भारत और विश्व स्तर पर वापसी की है।

स्थानीय और विदेशी कारक

हालाँकि घरेलू खाद्य कीमतों में हालिया वृद्धि के लिए बड़े पैमाने पर "स्थानीय" कारकों को दोषी माना जा रहा है, जिसमें मानसून के मौसम की शुरुआत में

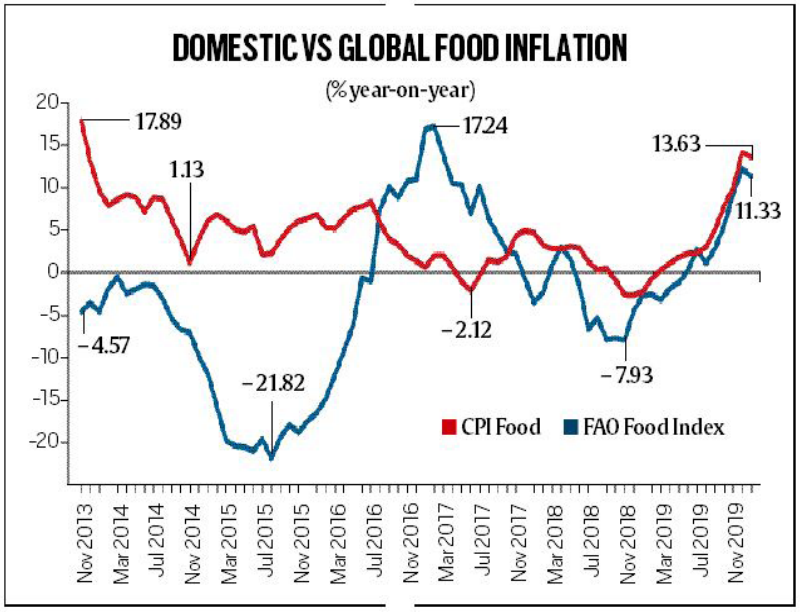

भारत में मुद्रास्फीति की माप

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

- यह एक ऐसा सूचकांक है जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे-खनन, विद्युत, विनिर्माण आदि के लिए वृद्धि का विवरण प्रस्तुत करता है।
- इसमें 14 स्रोत एजेंसियों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर आईआईपी का आकलन किया जाता है। इसमें औद्योगिक नीति एवं संवर्द्धन विभाग (डीआईपीपी), केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय और उर्वरक विभाग जैसी एजेंसियाँ शामिल हैं।
- इसे केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (CSO) द्वारा जारी किया जाता है, जो किसी चयनित अवधि के दौरान औद्योगिक उत्पादों की एक बास्केट के उत्पादन की मात्रा में अल्पावधि में होने वाले परिवर्तनों का मापन करता है।
- इसका भी आधार वर्ष 2004-05 से संशोधित कर 2011-12 को आधार वर्ष निश्चित किया गया है।

(जून-जुलाई) खराब बारिश और इसके बाद नवंबर के मध्य तक बहुत अधिक बारिश शामिल है जिसके कारण खरीफ की बुवाई और कटाई में देरी हुई थी।

उपभोक्ता मामलों के विभाग के अनुसार, दिल्ली में पैक पाम (palm) और सोयाबीन तेल की खुदरा कीमतें 31 जनवरी, 2019 को क्रमशः 79 रुपये और 100 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़कर 31 जनवरी, 2020 तक 108 रुपये और 122 रुपये हो गई।

यह 22%-37% की वृद्धि जनवरी 2019 और जनवरी 2020 के बीच FAO के वैश्विक वनस्पति तेल मूल्य सूचकांक में 34.37% की वृद्धि से लगभग मिलता जुलता था। चूंकि भारत अपनी खाद्य तेल की आवश्यकता का दो-तिहाई आयात करता है, इसलिए उच्च अंतरराष्ट्रीय कीमतें स्वचालित रूप से घरेलू बाजार में स्थानांतरित हो जाती थीं।

दूसरी ओर, दिल्ली में प्याज की खुदरा कीमतों में 31 जनवरी, 2019 से 31 जनवरी, 2020 तक 50 रुपए की वृद्धि, शुद्ध रूप से घरेलू खरीफ फसल की विफलता के कारण बढ़ी। वैश्विक कीमतें घरेलू बाजार में भी निर्यात के माध्यम से प्रेषित की जा सकती हैं, जहाँ व्यापारी इसे विदेशों में बेच देंगे अगर वसूली स्थानीय बाजार के सापेक्ष बेहतर है, इसलिए सरकार ने ऐसी संभावना को खतम करने के उद्देश्य से सितंबर 2019 से प्याज के शिपमेंट पर प्रतिबंध लगाने की सोची थी।

थोक मूल्य सूचकांक (Wholesale Price Index)

- यह भारत में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला मुद्रास्फीति संकेतक है।
- इसे वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय द्वारा प्रकाशित किया जाता है।
- इसमें घरेलू बाजार में थोक बिक्री के पहले बिंदु किए जाने-वाले सभी लेन-देन शामिल होते हैं।
- इस सूचकांक में कुछ चुनी हुई वस्तुओं को शामिल किया जाता है। इन वस्तुओं के औसत मूल्य में परिवर्तन के आधार पर महँगाई दर में परिवर्तन का पता चलता है।
- भारत और फिलीपींस जैसे देशों में महँगाई के माप के लिए थोक मूल्य सूचकांक का उपयोग किया जाता है।
- वर्ष 2017 में अखिल भारतीय WPI के लिए आधार वर्ष 2004-05 से संशोधित कर 2011-12 को आधार वर्ष निश्चित किया गया है।
- भारत में इस सूचकांक में खाद्यान्न, धातु, ईंधन और रसायन जैसे सभी पदार्थों को शामिल किया गया है, इससे महँगाई दर के बारे में सटीक जानकारी मिलने की सम्भावना अधिक रहती है।

विचलन की अवधि

उपरोक्त चार्ट से पता चलता है कि घरेलू सीएफपीआई और एफएओ खाद्य मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति की दर मार्च 2018 के आसपास से ही शुरू हुई थी, जबकि इससे पहले की अवधि में महत्वपूर्ण विचलन का प्रदर्शन किया गया था।

एफएओ सूचकांक फरवरी 2011 में 240.1 पर पहुँच गया था, लेकिन जुलाई 2014 तक 200 से अधिक स्तर पर रहा। वैश्विक कीमतें उसके बाद गिरने लगी और 2016 की शुरुआत तक कम रहीं, जिसके कारण एफएओ सूचकांक फरवरी 2016 में 149.3 हो गया। घरेलू खाद्य मुद्रास्फीति नवंबर 2013 में 17.89% से कम, 2016 की शुरुआत में 7% से नीचे गिर गया, क्योंकि कम वैश्विक कमोडिटी की कीमतों ने भारतीय कृषि निर्यात की माँग को कम कर दिया था।

हालाँकि, घरेलू मुद्रास्फीति में वास्तविक गिरावट (5% सीमा तक) सितंबर 2016 के बाद हुई। घरेलू कीमतें, विशेषकर विमुद्रीकरण, वैश्विक कीमतों की तुलना में अगस्त 2016 और अक्टूबर 2017 के बीच अधिक रहीं। FAO सूचकांक मुद्रास्फीति, वास्तव में इसी सीपीएफआई दर से अधिक थी।

जब अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू खाद्य मूल्य दोनों नए सिरे से सख्त होने के संकेत दे रहे हैं, तो सवाल यह है कि यह प्रवृत्ति कितनी टिकाऊ है? वर्तमान में कम से कम मंदी के तीन कारक हैं।

पहला, निश्चित रूप से नोवेल कोरोना वायरस महामारी ने पाम और सोयाबीन ऑयल से लेकर दूध पाउडर और मांस तक में चीन के क्रय को कम कर दिया है। मलेशिया में पाम तेल की कीमतें पिछले एक महीने में 2,922 रिंग्गित (+ 719) से बढ़कर 2,725 रिंग्गित (658 डॉलर) हो गई हैं।

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index)

- उपभोक्ता कीमत सूचकांक किसी अर्थव्यवस्था के उपभोग व्यय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुओं और सेवाओं की कीमत में परिवर्तन का आकलन करने वाली व्यापक माप को उपभोक्ता कीमत सूचकांक कहा जाता है।
- इसमें वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें खुदरा मूल्य पर ली जाती हैं।
- इसका आधार वर्ष 2011-12 है। इसे मासिक आधार पर जारी किया जाता है।
- **इसके निम्नलिखित चार प्रकार हैं:**
- औद्योगिक श्रमिकों के लिए
- कृषि मजदूर के लिए
- ग्रामीण मजदूर के लिए
- संयुक्त रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए

दूसरा है कच्चा तेल 3 जनवरी को संयुक्त राज्य अमेरिका के हवाई हमले, जिसमें ईरान का शीर्ष सैन्य कमांडर मारा गया था, के बाद ब्रेंट क्रूड की कीमतें 70 डॉलर प्रति बैरल तक पहुँच गई थीं, लेकिन यह मंगलवार को + 57.67 / बैरल पर बंद हुआ।

तीसरा भारत में रबी (सर्दी-वसंत) फसल की पैदावार भरपूर होने की संभावना है। अधिक और बेमौसम बारिश के कारण खरीफ की फसल इतनी अच्छी नहीं हुई। हालाँकि, पिछले साल की तुलना में उसी बारिश ने 9.5% तक रबी के क्षेत्रफल को बढ़ावा देने में मदद की है। मार्च से मंडियों में इस फसल के आने से कीमतों में गिरावट आ जाएगी, खासकर सब्जियों और दालों की कीमतों में, जिसमें जनवरी में साल दर साल खुदरा महँगाई दर 50.19% और 16.71% रही थी।

आपूर्ति की तंगी विश्व स्तर पर और भारत में, यहाँ तक कि दूध में भी देखी जा रही है। जनवरी 2019 और जनवरी 2020 के बीच मलेशियाई पाम तेल की कीमतें, जो औसतन 2,037 रिंग्गित से औसतन 3,014 रिंग्गित तक बढ़ीं, न्यूजीलैंड के वैश्विक डेयरी व्यापार की नीलामी में स्किम्ड मिल्क पाउडर की दर भी कोरोना वायरस के आने से पहले इस अवधि के दौरान + 2,201 से बढ़कर + 3,366 प्रति टन हो गई थी।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वैश्विक वस्तुओं की कम कीमतों ने भारतीय कृषि निर्यात की माँग को कम किया हैं।
2. भारत खाद्य तेल की आवश्यकता का दो तिहाई आयात करता है।
3. वैश्विक कीमतों को घरेलू बाजार में निर्यात के माध्यम से प्रेषित किया जा सकता है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3

(c) 2 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

Expected Questions (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements:

1. Low prices of global commodities have reduced the demand for Indian agricultural exports.
2. India imports two-thirds of the edible oil requirement.
3. Global prices can be transmitted to the domestic market through exports.

Which of the above statements are correct?

(a) 1 and 2 (b) 1 and 3

(c) 2 and 3 (d) All of the above

नोट : 18 फरवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. आयातित मुद्रास्फीति से क्या अभिप्राय है? यह किस प्रकार से अर्थव्यवस्था के विकास और उपभोग पैटर्न को प्रभावित करती है? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

What does imported inflation mean? How does this affect the development and consumption patterns of the economy? Discuss. (250 words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।